जनसत्ता 26-4-16, पृ० 7

प्रादेशिक जैव प्रौद्योगिकी केंद्र बनेगा राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान

नई दिल्ली, 25 अप्रैल (भाषा)। प्रादेशिक जैव प्रौद्योगिकी केंद्र को राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था के रूप में स्थापित करने वाले एक विधेयक पर लोकसभा में चर्चा शुरू हुई। केंद्रीय मंत्री डा. हर्षवर्द्धन ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को अग्रणी राष्ट्र बनाने और स्वास्थ्य सेवाओं, सस्ती दवाओं, फसलों के विकास, आनुवांषिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में शोध कार्य में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

प्रादेशिक जैव प्रौद्योगिकी केंद्र विधेयक 2016 को चर्चा के लिए रखते हुए विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री हर्षवर्द्धन ने कहा कि इसका मकसद यूनेस्को के तहत जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्षेत्रीय केंद्र संबंधी संस्था स्थापित करना है। साल 2003 में तत्कालीन मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने यूनेस्को की बैठक में इसका प्रस्ताव रखा था कि ऐसा एक केंद्र स्थापित हो जहां भारत इस विषय पर एशियाई देशों के साथ समन्वय स्थापित करे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ा सके। बाद की सरकारों ने भी इसे बढ़ाया।

उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी ऐसा क्षेत्र है, जहां दुनिया में भारत ने स्थान बनाया है। यह विशेष तौर पर हेपेटाइटिस जैसे रोगों के लिए बेहद सस्ता टीका विकसित करने से स्पष्ट है। उन्होंने कहा कि हाल ही में रोटा वायरस के लिए टीका विकसित किया गया। यह सस्ती दवाओं के विकास, फसलों के विकास और जेनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चर्चा में हिस्सा लेते हुए कांग्रेस के शशि थरूर ने कहा कि प्रौद्योगिकी के विकास के साथ जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई क्रांति आई है। जैव प्रौद्योगिकी नया क्षेत्र नहीं है लेकिन इसके आधुनिक आयाम ने इसे बेहद महत्वपूर्ण बना दिया है। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का अग्रणी स्थान है और इसने आनुवांषिक और जीनोम के क्षेत्र में नए द्वार खोले हैं। लेकिन जैव आतंकवाद हमारे सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरा है।

थरूर ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारे देश में आधारभूत संरचना का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। इस दिशा में पहल किए जाने की जरूरत है। शशि थरूर ने कहा कि इसके साथ ही जैव प्रौद्योगिकी नियामक प्राधिकार विधेयक पारित किए जाने और जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पेटेंट को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। भाजपा के जगदम्बिका पाल ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया में हमारी हिस्सेदारी और विश्वसनीयता बढ़ी है। इस संबंध में नए विधेयक में कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं जिसमें दक्षेस देशों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षेत्रीय स्तर पर जैव प्रौद्योगिकी सहयोग बढ़ाना शामिल है। यह एक महत्वपूर्ण पहल है जो काफी पहले ही हो जाना चाहिए था। तृणमूल कांग्रेस के तापस मंडल ने कहा कि देश में पर्याप्त मानव संसाधन हैं लेकिन दुनिया के 12वें शीर्ष देश होने के बावजूद वैश्विक व्यापार में देश की हिस्सेदारी महज दो फीसद है। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध का काफी महत्व है लेकिन इस क्षेत्र में भारत का योगदान नगण्य है। पेटेंट की संख्या भी काफी कम है। मंडल ने पश्चिम बंगाल में एक जैव प्रौद्योगिकी शोध केंद्र स्थापित किए जाने की मांग की।

दीपक 26/4/16

द्वारा प्रभारी, समाचारपत्र यूनिट